

# श्री राधा चालीसा

## ॥ दोहा ॥

श्री राधे वृषभानुजा , भक्तनि प्राणाधार ।  
वृन्दाविपिन विहारिणी , प्राणावौ बारम्बार ॥  
जैसो तैसो रावरौ, कृष्ण प्रिय सुखधाम ।  
चरण शरण निज दीजिये सुन्दर सुखद ललाम ॥

## ॥ चालीसा ॥

जय वृषभानु कुँवरी श्री श्यामा, कीरति नंदिनी शोभा धामा ॥  
नित्य बिहारिनी रस विस्तारिणी, अमित मोद मंगल दातारा ॥1॥  
राम विलासिनी रस विस्तारिणी, सहचरी सुभग यूथ मन भावनी ॥  
करुणा सागर हिय उमंगिनी, ललितादिक सखियन की संगिनी ॥2॥

दिनकर कन्या कुल विहारिनी, कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनी ॥

नित्य श्याम तुमररौ गुण गावै, राधा राधा कही हरशावै ॥३॥

मुरली में नित नाम उचारें, तुम कारण लीला वपु धारें ॥

प्रेम स्वरूपिणी अति सुकुमारी, श्याम प्रिया वृषभानु दुलारी ॥४॥

नवल किशोरी अति छवि धामा, ददुति लधु लगै कोटि रति कामा ॥

गोरांगी शशि निंदक वंदना, सुभग चपल अनियारे नयना ॥५॥

जावक युत युग पंकज चरना, नुपुर धुनी प्रीतम मन हरना ॥

संतत सहचरी सेवा करहिं, महा मोद मंगल मन भरहीं ॥६॥

रसिकन जीवन प्राण अधारा, राधा नाम सकल सुख सारा ॥

अगम अगोचर नित्य स्वरूपा, ध्यान धरत निशिदिन ब्रज भूषा ॥७॥

उपजेउ जासु अंश गुण खानी, कोटिन उमा राम ब्रह्मिनी ॥

नित्य धाम गोलोक विहारिन , जन रक्षक दुःख दोष नसावनि ॥८॥

शिव अज मुनि सनकादिक नारद, पार न पाँई शेष शारद ॥

राधा शुभ गुण रूप उजारी, निरखि प्रसन होत बनवारी ॥९॥

ब्रज जीवन धन राधा रानी, महिमा अमित न जाय बखानी ॥

प्रीतम संग दे ई गलबाँही , बिहरत नित वृन्दावन माँहि ॥१०॥

राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा, एक रूप दोउ प्रीति अगाधा ॥

श्री राधा मोहन मन हरनी, जन सुख दायक प्रफुलित बदनी ॥११॥

कोटिक रूप धरे नंद नंदा, दर्श करन हित गोकुल चंदा ॥

रास केलि करी तुहे रिझावें, मन करो जब अति दुःख पावें ॥१२॥

प्रफुलित होत दर्श जब पावें, विविध भांति नित विनय सुनावे ॥

वृन्दारण्य विहारिनी श्यामा, नाम लेत पूरण सब कामा ॥13॥

कोटिन यज्ञ तपस्या करहु, विविध नेम व्रतहिय में धरहु ॥

तऊ न श्याम भक्तहिं अहनावें, जब लगी राधा नाम न गावें ॥14॥

त्रिन्दाविपिन स्वामिनी राधा, लीला वपु तब अमित अगाधा ॥

स्वयं कृष्ण पावै नहीं पारा, और तुम्हें को जानन हारा ॥15॥

श्री राधा रस प्रीति अभेदा, सादर गान करत नित वेदा ॥

राधा त्यागी कृष्ण को भाजिहैं, ते सपनेहुं जग जलधि न तरिहैं ॥16॥

कीरति हूँवारी लडिकी राधा, सुमिरत सकल मिटहिं भव बाधा ॥

नाम अमंगल मूल नसावन, त्रिविध ताप हर हरी मनभावना ॥17॥

राधा नाम परम सुखदाई, भजतहीं कृपा करहिं यदुराई ॥

यशुमति नंदन पीछे फिरेहैं, जी कोऊ राधा नाम सुमिरिहैं ॥18॥

रास विहारिनी श्यामा प्यारी, करहु कृपा बरसाने वारी ॥  
वृन्दावन है शरण तिहारी, जय जय जय वृषभानु दुलारी ॥19॥

॥॥दोहा॥॥

श्री राधा सर्वेश्वरी , रसिकेश्वर धनश्याम ।  
करहूँ निरंतर बास मै, श्री वृन्दावन धाम ॥